हिन्दी साहित्य समीक्षायन

दयाशंकर

हिन्दी साहित्य समीक्षायन

हिन्दी साहित्य समीक्षायन

दयाशंकर

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN 978-93-93580-44-3

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-45506552, 7291920186, 9350809192

www : anuugyabooks.com

आवरण

मीना-किशन सिंह

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

MERI SAHITYA SAMIKSHAYAN

Literary Criticism by Dayashankar

भूमिका

पढ़ते-गुनते और लिखते एक और पुस्तक बन गई, जिसका नाम मुझे सूझा 'हिन्दी साहित्य समीक्षायन'। इसमें अधिकतर आलेख पुस्तकों की समीक्षाएँ ही हैं। नई-पुरानी दोनों तरह की पुस्तकों की समीक्षाएँ। आधुनिक हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं से गुजरा तो लिखना भी हो गया। इनमें से ज्यादातर समीक्षाएँ पत्रिकाओं में छप चुकी हैं, तो इक्का-दुक्का छपने से भी रह गयी हैं। कथा, प्रकर, वर्तमान साहित्य, दस्तावेज, हंस, बहुवचन, समन्वय पश्चिम, शब्दार्थ, हिन्दी अनुशीलन, अरावली उद्घोष, साहित्य परिवार, रचना कर्म आदि पत्रिकाओं के सम्पादकों ने उन्हें अपनी-अपनी पत्रिकाओं में जगह दी, इसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

'हिन्दी साहित्य समीक्षायन' में कुछ आलेख ऐसे हैं जो किसी पुस्तक की भूमिका के रूप में लिखे गये हैं या किसी पुस्तक की स्वतन्त्र समीक्षा के रूप में, लेकिन उनकी प्रकृति भी समीक्षात्मक है। 'हिन्दी बचाओ' मंच का एक साल, दयाराम सतसई विमर्श वाले आलेख साफगोई परक आलोचना की धार के चलते छपते-छपते भी नहीं छपे। विधा-समीक्षा की दृष्टि से प्रस्तुत पुस्तक बहुरंगी हैं। उपन्यास कहानी, नाटक, जीवनी, निबन्ध, समीक्षा, भाषा, कविता आदि हिन्दी की अनेक विधाएँ समीक्षायन में शामिल हैं। तीस वर्षों के दायरे में फैले आलेख पुस्तक की शक्ल बनाने में लगा दिये गये हैं।

पहली बार ऐसा हुआ है कि अनुज्ञा बुक्स के मालिक भाई सुधीर वत्स ने दो वर्षों से अधिक का समय समीक्षायन को छापने के लिए लिया है। इसका मुख्य कारण कोविड-19 का उन पर सीधा हमला था। समय उन्होंने जरूर लिया, लेकिन वादा खिलाफी नहीं की। 'हिन्दी साहित्य समीक्षायन' को पाठकों तक पहुँचाने के लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। समीक्षा पठन-पाठन के कुसमय के बावजूद उम्मीद के साथ 'हिन्दी साहित्य समीक्षायन' पाठकों को सौंपी जा रही है। उनकी प्रतिक्रिया का स्वागत है।

मकर संक्रांति 2023

दयाशंकर
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष-हिन्दी विभाग
सरदार पटेल विश्वविद्यालय
वल्लभ विद्यानगर (गुजरात)
मो. 9427549364

अनुक्रम

भूमिका 5

(क) कथा समीक्षा

- आज़ाद भारत का शहरी चेहरा : 'भाग्यदेवता' 11
- आजाद भारत का गँवई चेहरा : 'धरती धन न अपना' 15
- अतीत और वर्तमान से जुड़ी स्मृतियाँ : 'जीवनमेघ' 25
- 'कितने पाकिस्तान' : सर्जना-संसार 28
- 'गाँव भीतर गाँव' की उत्तर-आधुनिक गाथा 38
- 'बिन ड्योढ़ी का घर' की तलाश में 46
- 'दूसरा आँचल': जीवन यथार्थ 53
- 'गंगटोक का एक भीगा-भीगा दिन' की कहानियाँ 56

(ख) कथेतर समीक्षा

- 'अन्धेर नगरी' : पुनर्मूल्यांकन 63
- शिवरानी के प्रेमचन्द और प्रेमचन्द की शिवरानी : सन्दर्भ - 'प्रेमचन्द घर में' 73
- जीवन की जड़ता को तोड़ने वाला शास्त्र : 'घुमक्कड़ शास्त्र' 80
- 'कबीरा खड़ा बाजार में' : आमने-सामने 86
- 'पाँय न पाँख' के निबन्ध 92
- नामवर सिंह का छायावाद विमर्श 97
- 'मार्क्सवाद देव मूर्तियाँ नहीं गढ़ता' के बहाने 106
- 'दयाराम और उनकी हिन्दी कविता' : विमर्श 118
- 'उग्र विमर्श' का विमर्श 129
- 'भारतीय नारीवाद : स्थिति और सम्भावना' मेरी दृष्टि में 132
- 'हिन्दी बचाओ मंच का एक साल' की हकीकत 136
- 'परस्पर : भाषा-साहित्य-आन्दोलन' की बात 142
- प्रतिध्वनि का हिन्दी संस्करण 146

(ग) काव्य समीक्षा

- 'नदी और उसके सम्बन्धी तथा अन्य गीत' : समीक्षा 151
- आपबीती और जगबीती का मार्मिक दस्तावेज : 'विराट सतसई' 155
- 'लंका की परछाइयाँ' : बाहरी-भीतरी संसार 159
- 'साँसों के दरमियाँ' के रूबरू 170
- 'समय के समर में' की कविताएँ 175
- 'मशालें फिर जलाने का समय है' की ग़ज़लें 177
- 'पिता का शोकगीत' की कविताएँ 184

सन्दर्भ ग्रन्थ 190

(क) कथा समीक्षा

आज़ाद भारत का शहरी चेहरा : 'भाग्यदेवता'

प्रेमचन्द की परम्परा को बड़ी सूझ-बूझ और रचनात्मकता के साथ आगे बढ़ाने और विकसित करनेवाले उपन्यासकारों में भैरव प्रसाद गुप्त का नाम काफी चर्चित है। स्वातन्त्र्योत्तर कथाकारों में अपने प्रतिबद्ध लेखन, यथार्थ की गहरी पकड़ और वैज्ञानिक समझ के लिए उनका नाम हमेशा लिया जायेगा। उन्होंने अपने विशाल और सफल लेखन से हिन्दी कथा-साहित्य को अत्यन्त समृद्ध किया है। शोले, मशाल, गंगा मैया, सती मैया का चौरा, आशा, कालिन्दी, नौजवान, धरती आदि उनके महत्त्वपूर्ण उपन्यास हैं।

भैरव जी के उपन्यासों का प्लाट बहुत व्यापक है। उनके उपन्यासों की कथावस्तु, चाहे जिस क्षेत्र से ली गयी हो, लेकिन उनकी पक्षधरता हमेशा मेहनतकश, संघर्षशील साधारण जनता के प्रति रही है। 'भाग्य देवता' उनके उपन्यास साहित्य की अगली कड़ी है। यह उपन्यास प्रत्यक्षत: प्रेस मालिक और प्रेस मजदूरों के आपसी संघर्ष की कथा है और परोक्षत: पूँजीपति वर्ग और अपने हक के लिए लड़ने वाले सर्वहारा वर्ग के संघर्ष की कथा। प्रेमचन्द ने गोदान (1936) में ढहते हुए सामन्तवाद की कोख से जन्म लेते हुए पूँजीवाद और छोटे किसानों को मज़दूर में बदलते हुए दर्शाया है। यह उपन्यास गोदान का अगला चरण लगता है। गोदान में गाँव और शहर के बीच दो फाँक बराबर मौजूद है। वहाँ एक तरफ सामन्तवाद के टूटते ढाँचे में रायसाहब, होरी हैं तो दूसरी तरफ बनते पूँजीवाद के ढाँचे में खन्ना, तनखा, मालती, मेहता और गोबर। सामन्तवाद के केन्द्र में गाँव, भूमि, सामन्त, किसान और खेत मज़दूर हैं तो पूँजीवाद के केन्द्र में शहर, पूँजी, पूँजीपति और मिल-मज़दूर हैं। गोदान में कथा का वह अंश जिसका सीधा सम्बन्ध पूँजीवाद से है, को कम जगह दी गयी है।

'भाग्यदेवता' देशकाल की दृष्टि से आजादी के बाद यानी 'गोदान' के चौदह-पन्द्रह वर्षों के बाद की स्थिति पर आधारित रचना है। यहाँ भैरव जी का मुख्य फोकस शहर पर है। यहाँ सामन्तवाद, जिसके प्रतिनिधि धनुर्धारी सिंह हैं, की स्थिति गौण और कमजोर है। सामन्तवाद और पूँजीवाद यहाँ भी एक साथ हैं, लेकिन इनके अलावा पूँजीवाद की असंगतियों से पैदा हुई समाजवादी विचारधारा भी सक्रिय है। गोदान में इसकी चर्चा नहीं है। 'भाग्यदेवता' में मालिक और मजदूर, पूँजीपति और पूँजी केन्द्र में आ जाते हैं और सामन्तवाद हाशिए पर चला जाता है।

'भाग्यदेवता' की कथावस्तु प्रधानत: सामन्तों के नव रूपान्तर पूँजीपतियों और खेत-श्रमिकों के नव रूपान्तर मिल-मजदूरों के आपसी संघर्ष पर आधारित है। राजा, जो इस उपन्यास का मुख्य चरित्र है, का दोहरा रूप है। उसका एक रूप जमींदार का है और दूसरा पूँजीपति का। पहले रूप में वह अपने को राजा समझता है और अपने जीवन के लिए पैसे को पानी की तरह बहाता है। वह इस रूप में विलासी, जुआरी और कामचोर है। राजा के दूसरे रूप